हिन्दी का गौरव और संघर्ष

नहीं चाहिए हमें ऐसा विकास,
जो हमको अपनी मातृभाषा पर लाए हताश।
कहाँ थे हम, और कहाँ आ गए हैं,
अपनी ही भाषा बोलने में अब क्यों शर्माते हैं?

हिन्दी, जिसने संजोई हमारी परंपरा,
जिसने सदा रखा ऊँचा भारत का गौरव और मान।
जिसकी मधुरता ने जोड़ा प्रेम का पुल,
जिसने विश्वास का दिया अटल संधान।

वही हिन्दी, जो हमारे पूर्वजों की थी पहचान,
महापुरुषों ने किया जिसका सम्मान।
संघर्ष और ज्ञान की अनमोल धारा,
हिन्दी के रूप में बही निरंतर, प्यारा।

आज उसी हिन्दी को हमने कहाँ ला दिया,
अपने ही देश में उसे मेहमान बना दिया।
नहीं चाहिए ऐसा विकास,
जो हिन्दी के सम्मान को करे उदास।

दुःख होता है ये देखकर,
हिन्दी को पराया बना रहे हैं हम,
अपने ही घर में,
जिसने हमें दिया पहचान और दम।

अभी तक अमीर-गरीब का था दर्द,
अब जोड़ रहे हैं एक और जख्म,
हिन्दी और अंग्रेज़ी की नई दीवार,
जिसमें फँस गया है देश का हर परिवार।

कॉलेज और विश्वविद्यालय में,
अंग्रेज़ी का हो रहा मान,
अगर यही रहा हाल,
तो हिन्दी हो जाएगी अतीत का बयान।

उत्तर और दक्षिण का विवाद पुराना,
उसमें भी हिन्दी को मिला है बस अपमान।
अब उत्तर में भी उसे बना रहे हैं पराया,
अपनी ही जड़ों से उसे कर रहे हैं जुदा।

भारत, जो हिन्दीमय था कभी,
जहाँ की भाषा में बसी थी सजीवता।
आज वही देश क्यों कर रहा है उसे दरकिनार,
न्यायालयों और परीक्षाओं में,
क्यों अंग्रेज़ी को दे रहे हैं आधार?

यह अपमान हिन्दी का ही नहीं,
ये अपमान है हमारी सभ्यता का,
महापुरुषों के आदर्शों का,
और आम जनता के विश्वास का।

नहीं चाहिए हमें ऐसा विकास,
जो हमे अपने ही देश में हिन्दी बोलने पर लाए हताश।
हमारा लक्ष्य है विश्व में सबसे ऊँचा स्थान,
पर वो आएगा,
जब अपनी भाषा को देंगे मान।

जय हिन्दी, महान हिंदी,
क्योंकि हिन्दी ही भारत की जान है,
हिन्दी ही है देश का गौरव,
और इसमें ही ईश्वर का रूप साक्षात है।

प्रतीक झा